Look n Learn Children's Jain Magazine

Rs. 5.00/-

10th October 2019 Every Fortnight English, Hindi & Gujarati

Divine Journey of Shravak Naysar to Lord Mahavir

Year - 13, Vol: 14, Issue: 05, Date: 10.10.2019
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी को, सम्यक् दर्शन प्रगटने के पश्चात हुए भवो में से विशेषत: २६ भवों में इस आत्मा के क्रमिक आध्यात्मिक विकास का बहुत ही रोचक वर्णन मिलता है। चलो हम पूर्व भवों के मुख्य-मुख्य प्रसंग के दर्शन करते है।

प्यारे बच्चों,

आओ, इस दिवाली में हम प्रभु वीर के सद्गुणों का गुणगान करे। प्रभु वीर जैसे हम भी वीर बने, क्षमावान बने, करुणानिधान बने। हमारे जीवन में भी मैत्री भाव प्रगट हो, विनय भाव प्रगट हो और हमे भी सुपात्रदान देने के भाव प्रगट हो।

प्रभु के जीवन का हर एक प्रसंग और सभी घटनाएँ हमें सच्चा श्रावक बनने की प्रेरणा देती है।

आओ, आज से हम भी यह संकल्प करे की हम अपने जीवन में ऐसे छोटे छोटे नियम अपनाए जो हमे सिध्धि की प्राप्ति में सहायभूत हो सकते है।

नयसारः प्रथम बोधिलाभ

वर्तमान तीर्थंकर भव से २६ भव भगवान महावीर का जीव नयसार नाम का एक वन अधिपालक (फॉरेस्टर) था। वह जंगल की इमारती लकड़ियाँ कटवाकर नगर में लाता था। नयसार का नियम था कीसी को भोजन प्रदान कर स्वयं आहार करना। एक बार मध्यान्ह के समय सभी कर्मचारी के साथ नयसार भी एक वृक्ष की छाया में अपने साथ लाया हुआ सात्विक भोजन देखकर अपने नियम का स्मरण किया और उसी समय उसे पहाड़ो की तलहटी में त्यागी श्रमण आते हुए दिखाई दिए।

नयसार ने अत्यन्त हार्दिक श्रद्धा, तथा भक्तिपूर्वक मुनियों को शुद्ध आहार का दान दिया। मुनियों ने उसे सत्धर्म का बोध दिया। फलस्वरुप उसके हृदय में सम्यक्त्व-बीज अंकुरित हुआ और इसी भव से महावीर के पूर्व भवों की गणना की जाती है।

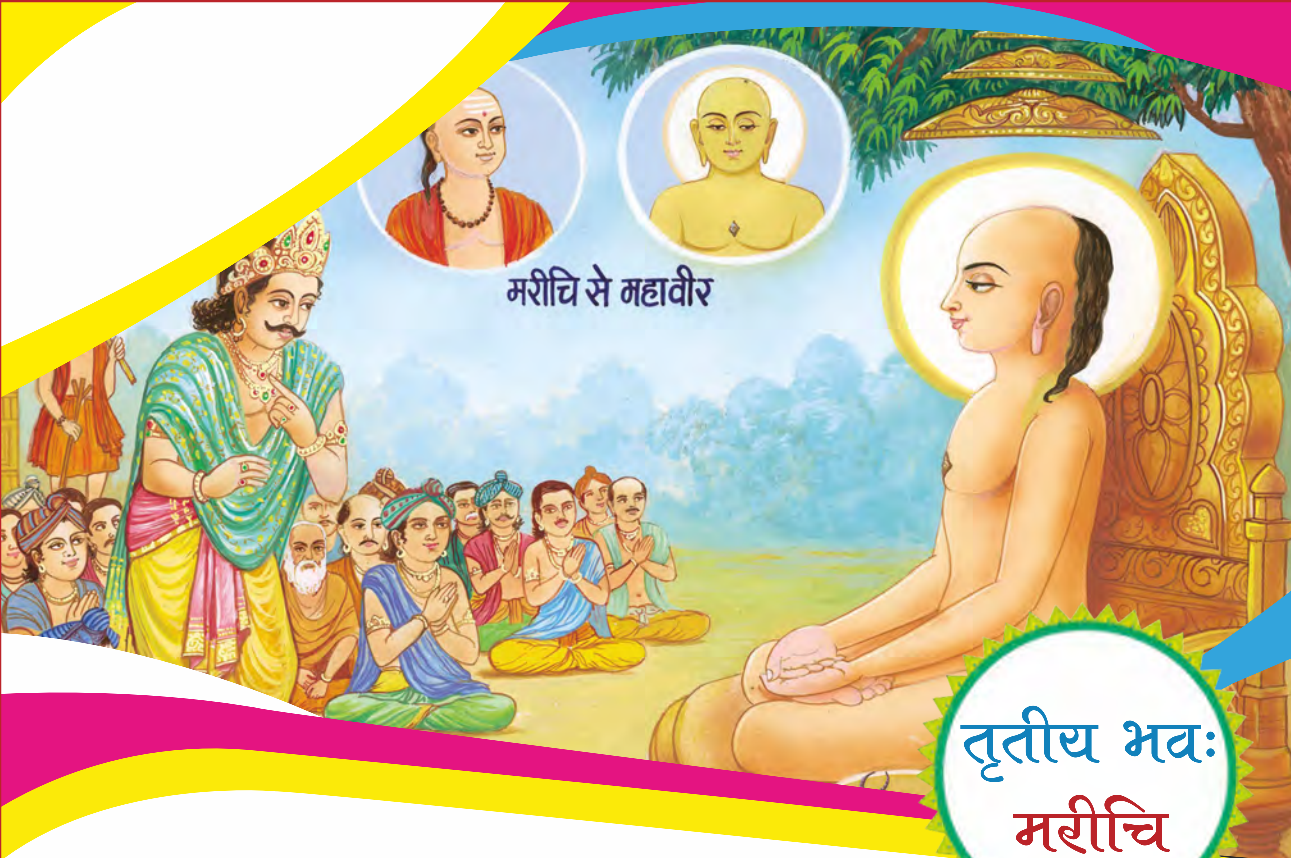

तृतीय भवः मरीचि

नयसार का जीव आयुष्य पूर्ण कर सौधर्म-देवलोक में गया। वहाँ से अयोध्या नगरी में चक्रवर्ती भरत का पुत्र मरीचि हुआ। भगवान ऋषभदेव का प्रथम प्रवचन सुनकर मरीचि ने श्रमण दीक्षा ग्रहण की। परन्तु श्रमण जीवन की कठीन चर्या का पालन नहीं कर सकने के कारण उसने श्रमण वेष का परित्याग कर त्रिदण्डी धर्म अपनाया।

एक बार भगवान ऋषभदेव की सभा में चक्रवर्ती भरत ने उनसे प्रश्न किया, "प्रभो! आपकी इस सभा में कोई ऐसा महान आत्मा है जो भविष्य में आपके समान ही तीर्थंकर बनेगा?" ऋषभदेव ने कहा, भरत! इस धर्म सभा के बाहर तुम्हारा पुत्र मरीचि त्रिदंडी के वेष में उपस्थित है, वह अनेक जन्मों तक तपस्या आदि करके इस अवसर्पिणी काल का अन्तिम तीर्थंकर होगा।

सम्राट भरत हर्ष का यह संवाद मरीचि को सुनाने के लिए उसके पास आये और कहा, "मरीचि! तुम महान पुण्यशाली हो, भावी तीर्थंकर के रुप में तुम्हारा अभिनन्दन करता हूँ।"

भगवान ऋषभदेव का कथन सुनकर मरीचि हर्ष से उछलने लगा, साथ ही उसे कुल-गौरव का अभिमान भी जाग उठा। गर्व से दीप्त होकर वह बोला, "अहो! मेरा कुल कितना महान है? मेरा वंश कितना उत्तम है। मेरे दादा तीर्थंकर, मेरे पिता प्रथम चक्रवर्ती और मैं वासुदेव बनूँगा, चक्रवर्ती सम्राट बनूँगा और अन्त में इस अवसर्पिणी काल का अन्तिम तीर्थंकर भी बनूँगा। अहा! हो! हो!" इस घटना के बाद मरीचि का हृदय अहंकार से परिपूर्ण हो गया।

चौथा भव - देवलोक ४

पाँचवा भव - कौशिक ब्राह्मण
भगवान महावीर का जीव पाँचमें भव में कौशिक नाम के ब्राह्मण मे हुआ था। ५

छट्ठा भव - पुष्पमित्र ब्राह्मण ६

सातवाँ भव - देवलोक ७

आठवाँ भव - अग्निद्योत ब्राह्मण ८

नववाँ भव - देवलोक ९

दसवाँ भव - अग्निभूति ब्राह्मण १०

११ ग्यारहवा भव - देवलोक

१२ बारहवा भव - भारद्वाज ब्राह्मण

१३ तेहरवा भव - देवलोक

१४ चौदहवा भव - स्थावर ब्राह्मण

१५ पंद्रहवा भव - देवलोकनो

१६ सोलहवा भव - विश्वभूति

सोलहवा भव - विश्वभूति

मरिचि के भव के बाद १२ जन्मों में से उसने छह भव देव लोक के और छह भव मनुष्य के किये, जिनमें वह त्रिदण्डी परिव्राजक बना।

अनेक भवों के बाद १६ वें भव में मरीचि की आत्मा ने राजगृह नगर में विश्वभूति के रुप में जन्म लिया। इस जन्म में मुनि ने दीक्षा लेकर उग्र तपश्चर्या कि।

सत्रहवा भव - देवलोक

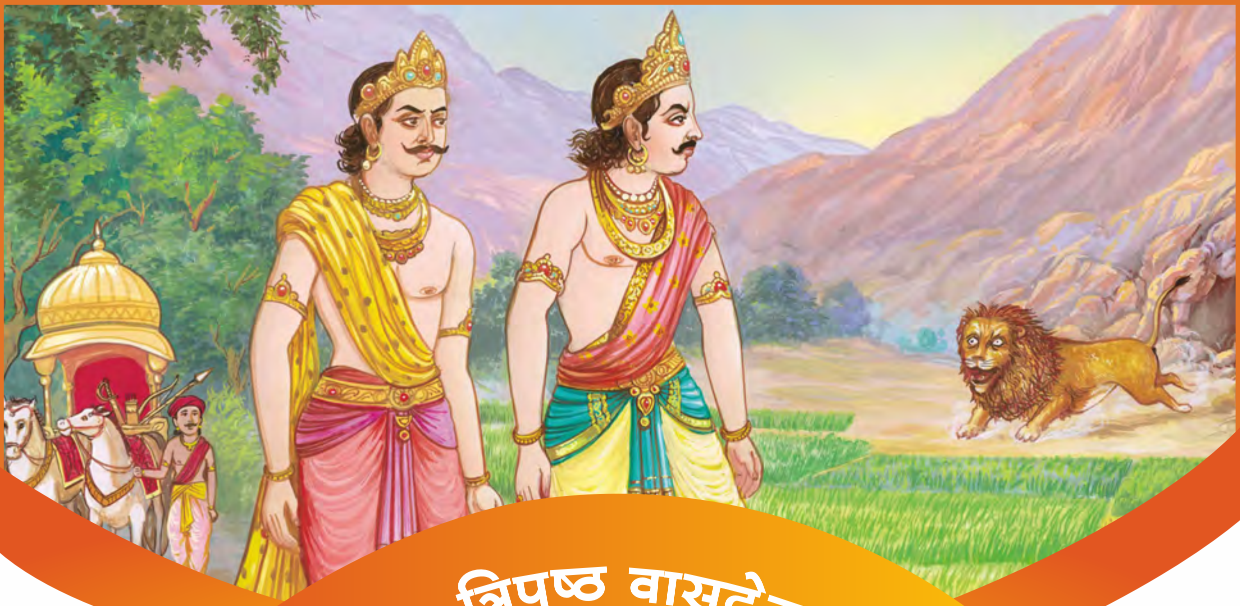

त्रिपृष्ठ वासुदेव

विश्वभूति का जीव आयुष्य पूर्णकर महाशुक्र देवलोक में गया और वहाँ से पोतनपुर के राजा प्रजापति की रानी मृगावती के पुत्र में (१८ वाँ भव) उत्पन्न हुआ। नाम रखा गया-त्रिपृष्ठ। विश्वभूति मुनि के जन्म में की हुई तपस्या और सेवा, आदि के फलस्वरुप त्रिपृष्ठ अद्भुत पराक्रमी, साहसी और तेजस्वी राजकुमार बना।

कुछ ही दिनों बाद राजा प्रजापति के पास अश्वग्रीव ने आदेश भेजा- "तुंगगिरि के वन शालिक्षेत्र की रक्षा के लिए आप तुरन्त चले जाइए।"

प्रजापति स्वयं ही सेना लेकर जाने को तैयार हुए तो राजकुमार त्रिपृष्ट ने उन्हें रोका और अपने बड़े भाई के साथ सशस्त्र सैनिकों को लेकर तुंगगिरि से शालि धान्यक्षेत्र में आ गये। वहाँ गाँव के किसानों से मिले, और सब जानकारी ली।

गाँव वालों ने कुमार को सिंह की गुफा और उसके आने का रास्ता बता दिया। त्रिपृष्टकुमार शस्त्रों से सज्जित होतर रथ पर बैठे और चल पड़े। सिंह की गुफा के पास सैनिकों ने हल्ला मचाया। गुफा में सोया सिंह जाग उठा, उसने सामने खड़े मनुष्यों को देखा तो क्रोध में उफनकर दहाड़ता हुआ कुमार की तरफ झपटा, कुमार ने भी सिंह को सामने आते देख -

"अरे! यह तो क्रोध में पैदल ही दौड़ रहा है, तो मैं फिर रथ पर क्यों चढ़ूँ? इसके पास तो कोई शस्त्र भी नहीं है, तो फिर मैं शस्त्र से क्यों लड़ूँ? पैदल के साथ पैदल और निःशस्त्र के साथ निःशस्त्र युद्ध होना चाहिए। यह सोचकर राजकुमार त्रिपृष्ठ रथ से उतर पड़े, शस्त्र फेंक दिये और सिंह के सामने बढ़ गये।

बिजली की भाँति झपटकर आते हुए सिंह ने जैसे ही कुमार पर आक्रमण किया-कुमार ने उसका जबड़ा पकड़कर चीर डाला जैसे कोई पुराना कपड़ा चीर देते हैं। सिंह की चीखभरी-भयंकर दहाड़ से पहाड़ियाँ गूँज उठीं, दूर-दूर खड़े सैनिकों के रोंगटे खड़े हो गये।

जब घायल सिंह सिसक रहा था, तब वासुदेव के सारथि ने उसे मधुर शब्दों में सांत्वना दी। जिससे सिंह को शान्ति का अनुभव हआ। सारथि का जीव आगे चलकर गणधर गौतम बना और सिंह का जीव एक कृषक। गौतम को देखकर वह कृषक पूर्व अनुरागवश उनका शिष्य बन गया परन्तु भगवान महावीर को देखकर उसके पूर्व भव के वैर के संस्कार जाग गये, और वह वापस लौट गया।

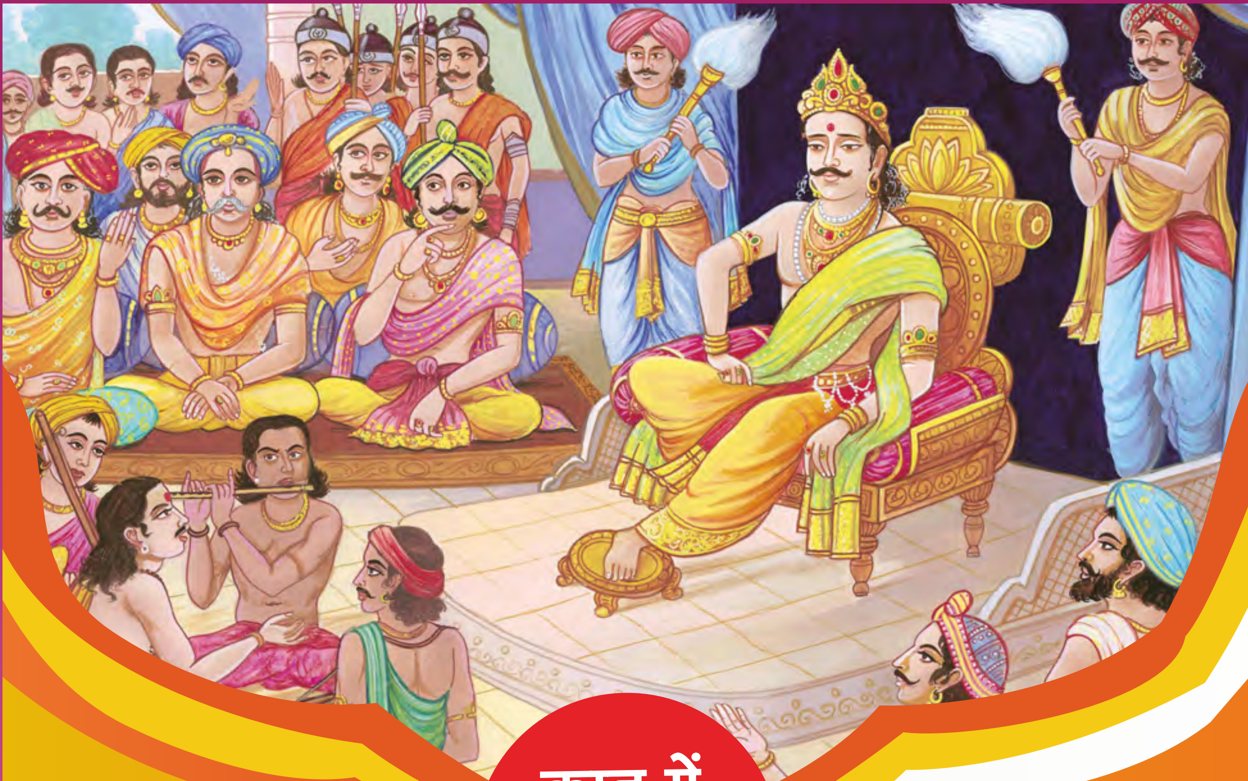

कान में शीशा

त्रिपृष्ठ वासुदेव को संगीत का बहुत शौक था। एक बार संध्या के समय सभा में बैठे थे, मनोरंजन का कार्यक्रम चल रहा था। मधुर संगीत सुनकर वासुदेव त्रिपृष्ठ मुग्ध हो गये। सभी सभासद मंत्र-मुग्ध से संगीत सुनने में लीन थे। सम्राट ने अपने शय्यापालक (शयनागार के परिचारक) से कहा - "मुझे नींद आ जाये तो संगीत बन्द करा देना।" सम्राट को संगीत सुनते -सुनते ही नींद की मीठी झपकियाँ आने लगीं।

रात्रि का शान्त समय, संगीत के उस मधुर मोहक वातावरण में सभी मदहोश से थे। सम्राट का आदेश शय्यापालक को याद नहीं आया, पूरी रात संगीत सभा चलती रही। सम्राट नींद में लीन थे। सुबह होने को आयी, तब सम्राट की आँखे खुलीं, देखा, संगीत का रंग वैसा ही जमा हुआ है। सभी संगीत की मस्ती में झूम रहे हैं।

त्रिपृष्ठ वासुदेव को क्रोध आ गया, शय्यापालक को डाँटते हुए कहा - "मैंने कहा था, मुझे नींद आने लगे तो संगीत बन्द करा देना। तुमने क्यों नहीं किया? "शय्यापालक ने घबराते हुए निवेदन किया-" महाराज! भूल हो गई, संगीत के आनन्द की वर्षा हो रही थी, सो बन्द कराना भूल गया।"

आज्ञा-भंग होने पर, त्रिपृष्ठ वासुदेव का क्रोध बढ़ गया। वह शय्यापालक की इस भूल पर आग-बबूला हो उठे। अपने सेवकों से कहा - "इसको संगीत बहुत प्रिय है ना? अपने स्वामी की आज्ञा से भी ज्यादा इसके कानों को संगीत अच्छा लगता है, तो जाओ, शीशा उबालकर इसके दोनों कानों में डाल दो। आज्ञा की अवहेलना करने का यही दण्ड दो इसे।"

वासुदेव की आज्ञा का पालन हुआ। भयंकर वेदना से छटपटाते हुए चीखते शय्यापालक के प्राण पखेरु उड़ गये।

उन्निसवा भव - नरकगति

त्रिपुष्ठ वासुदेव का जीव सातवी नरक में जाता है।

बीसवा भव - सिंह

सातवी नरक में नीकल के त्रिपुष्ठ का जीव बीसमें भव में केसरी सिंह तरीके जन्म लेता है।

इक्कीसवा भव - नरक

इक्कीसवें भव में प्रभु चौथी नरकमें नारकी के रुप में उत्पन्न हुए।

बाईसवा भव - मनुष्य

बाईसवे भव में प्रभु ने मनुष्यभव प्राप्त किया।

तेइसवा भव - प्रियमित्र चक्रवर्ती

तेईसमे भव में महाविदेह क्षेत्रमें में प्रियमित्र चक्रवर्ती हुए। संध्या समयके रंगो की अनित्यता को देखकर समस्त संसार की अनित्यता की भावना हुई और वैरागी हुए।

चौबीसवा भव - देवलोक, चौबीसमें भव में प्रभु सातवे महाशुक्र नाम के देवलोक में देव बनकर उत्पन्न हुए।

पच्चीसवा भव -नंदन राजा

पच्चीसवे भव में नंदन नाम का राजकुमार बनने के बाद राजा बने। अंत में दीक्षा ली। १ लाख वर्ष तक संयम आराधना की। मासखमण के पारण पर मासखमण करते लगे। ११,८०,६४५ मासखमण कीये, ११ अंगसूत्र के पाठी बने। समग्र जीवसृष्टि पर करुणाभाव बरसाये सर्व जीव का कल्याण हो। सबका भला हो ऐसी भावना और सबके लिए मैत्रीभाव, दया, करुणा के उत्कृष्ट भाव किए। प्रचंड तप और साधना कर के तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन किया। तप करके शरीके ममत्व को कम किया और आत्मा को शुद्ध किया।

छब्बीसवा भव - देवलोक

छब्बीसमें भव में दसवे देवलोक के देव बने।

Bhagwan Mahavir na 27 Bhav

Identify the good qualities of Bhagwan Mahavir and write it in the Aatma

Write down the qualities of Bhagwan Mahavir before 27th Bhav and in 27th Bhav.

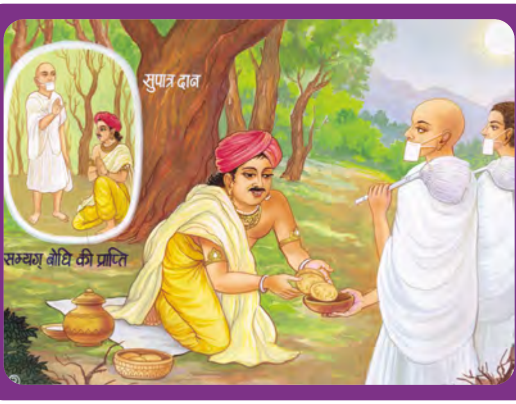

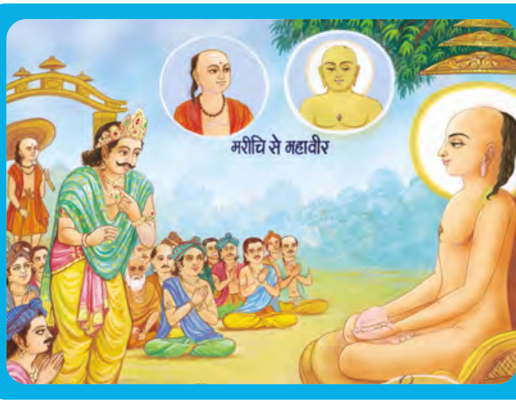

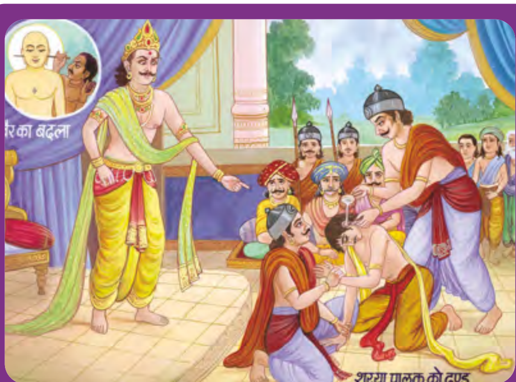

Lets know our Parmatma Mahavir

Birth name - जन्म नाम - Vardhaman वर्धमान	Name - नाम - Mahavir महावीर	Symbol - लाँछन - Lion सिंह
Family name - वंशनाम - Ikshvaku इक्ष्वाकु	Father's name - पिता- Siddharth Raja सिध्दार्थ राजा	Mother's name - माता - Trishladevi त्रिशला देवी
Source of Decent- च्यवन स्थान - Pranat प्राणत	Place of Birth - जन्म भुमि - Kshatriyakund क्षत्रियकुण्ड	Place of Enlightment - ज्ञान स्थान - Rujuvalika River ऋजुवालिका नदी
Place of Nirvan - निर्वाण स्थान - Parapuri पावापुरी	Periods of Practice- छद्मस्थ काल - $12\frac{1}{2}$ yrs/१२ $\frac{१}{२}$ साल	Age - आयुष्य - 72 yrs ७२ साल
Chief Disciple - प्रधान गणधर - Indrabhuti Gautam इन्द्रभूति गौतम	No of Disciples - गणधरों की संख्या- 11 / ११	Head of Female sceptics - प्रधान साध्वी - Chandanbala चन्दनबाला

LOOK N LEARN CHILDREN'S JAIN MAGAZINE

Please contact us for your Valuable Feedbacks, Gifting a Magazine, Complaints, Suggestions, or any Change of Address on...

Address :- Look n Learn Magazine
Parasdham,
Vallabh baug Lane,
Tilak Road, Ghatkopar (E),
Mumbai-77

Contact No :- 022-21027676

Email ID :- jainmagazine9@gmail.com

tumble®

So Cute ....

New Born Baby Products

Wonderkids Metrics Pvt Ltd.
Address : 307, Ashish Udyog Bhavan, B.J. Patel Road, Opp. SNDT College, Malad West. Mumbai - 400064
Mob : 9768077759 / 7977045129

AYAMBIL TAP

6 VIGAI TYAG

- Yoghurt
- Sugar
- Ghee
- Milk
- Oil
- All Fried food

आयंबिल एटले आहार थी अनाहार तरफ लइ जती अनन्य आराधना.

जमे तो बधा पण जेने जमता आवडे तेने जिन आराधक कहेवाय. (जैन आराधक)

आ वर्षे आयंबिल नी ओळी आसो सुद सातम थी आसो सुद पूनम सुधी एटले 5.10.2019 थी 13.10.2019 आवे छे.

आ नव दिवसनी नव पदनी आराधना...

नमो अरिहंताणं ना स्मरण साथे अरिहंत परमात्माने नमस्कार करी भाव वंदन साथे प्रार्थना करीए, हे अरिहंत परमात्मा क्यारे अमे वितराग दशाने प्रगट करीए क्यारे राग-द्वेष थी मुक्त थइए अने आपनी जेम अमे पण एक दिवस अवश्य अरिहंतता ने प्राप्त करीऐ एवी शुभ भावना.

प्रथम दिवस प्रथम पद

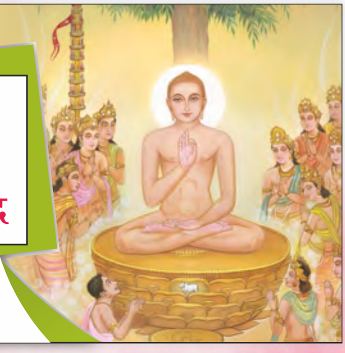

द्वितिय दिवस द्वितिय पद

नमो सिध्धाणं अनंता सिध्ध परमात्माने नमस्कार करीने अंतर थी भावना भाववानी के, हे सिध्ध परमात्मा मारे पण आपना जेवुं निष्पाप जीवन जीववुं छे, मारे काया थी मुक्ति जोइए छे अने आत्मा शुध्ध विशुध्ध बनी एक दिवस अवश्य सिध्ध पद ने प्राप्त थाय एवी मंगल भावना.

नमो आयरियाणं पद/आराधना साथे आचार्यजी ने वंदन नमस्कार करीने भावना भाववानी के, हे आचार्य भगवंत प्रवृत्तिओ तो में अनंता भवमां अनंती वार बदली छे एवो एक दिवस अवश्य आवे के आ भवमां गुरुकृपाए वृत्तिओ बदलावी शकुं एवी शुभ भावना.

तृतिय दिवस तृतिय पद

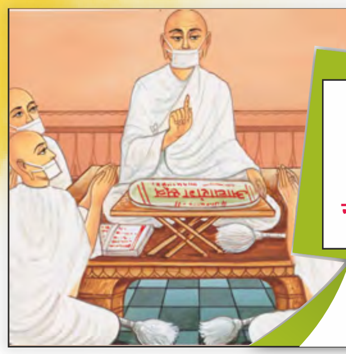

चतुर्थ दिवस चतुर्थ पद

नमो उवजझयाणं ना स्मरण साथे उपाध्यायजी ने नमस्कार करीने भावना भाववानी के, हे उपाध्याय भगवंत अमारा उपर एवी कृपा अने करूणा वरसावजो के एक दिवस अवश्य अमारी अंदरमां रहेलुं अनंतज्ञान प्रगट थाय अने अमे पण केवळज्ञान अने केवळदर्शन पामीऐ एज मंगल भावना.

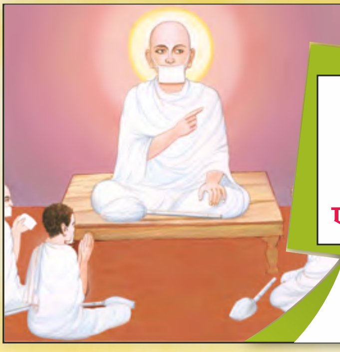

पांचमो
दिवस
पंचम पद

नमो लोए सव्व साहूणं लोकमां बिराजमान सर्व साधुओने अने एमना गुणोने नमस्कार करीने एवी प्रार्थना करीए के, हे सर्व साधु भगवंतो कोईपण साधु साध्वी प्रत्ये अविनय, अभक्ति, अपराध के अशातना न थाय एवी जागृति आपजो एवी हुं सावधानी राखी शकुं एवी कृपा करजो. एक दिवस अवश्य हुं पण संयम ग्रहण करी जिनशासन नी सेवा करी शकुं एज शुभ भावना.

नमो दंसणस्स दर्शन विशुध्धिनी भावना साथे दर्शन गुणने नमस्कार करीने प्रार्थना करीए के, हे परमात्मा जेनुं जेवुं स्वरुप छे ते स्वरुप ने जाणी शकुं एवी सम्यक्दृष्टि मारामां पण प्रगटे... आंख थी नहीं पण आत्मा थी दर्शन करी शकुं एवी दृष्टि मने प्राप्त थाय एवी कृपा वरसावजो.

छट्ठो
दिवस
छट्ठो पद

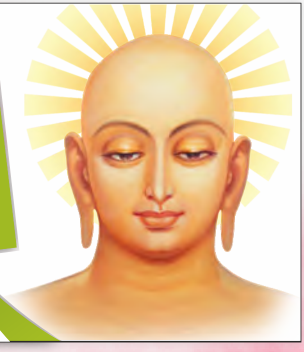

सातो
दिवस
सातमुं पद

नमो नाणस्स ज्ञान अने ज्ञानीओना गुणो ने नमस्कार करीने प्रार्थना करीए के, हे परमात्मा ज्ञान, ज्ञानी अने ज्ञानना साधनो प्रत्ये अहोभाव ज्ञानावरणीय कर्मो नो क्षय थइ शके अने मारो पुरुषार्थ प्रबळ बने अने मारामां रहेलुं अनंतज्ञान प्रगट थाय एवी कृपा वरसावजो.

नमो चरित्तस्स चारित्र धर्म ने वंदन करी दररोज एकवार तो स्मरण करवुं के, हे परमात्मा मारे तारो वेश एकवार पहेरवो छे मारा अंत समय पहेलां मारा अंतरमां संयम ना भाव प्रगटे एवी कृपा वरसावजो.

आठमो
दिवस
आठमुं पद

नमो
दिवस
नवमुं पद

नमो तवस्स अवगुण शुध्धि अने आत्मशुध्धि ना भावों साथे तप नामना गुण ने वंदन नमस्कार करीने प्रार्थना करीए के, हे परमात्मा तप द्वारा मारे मारा कर्मो क्षय करवा छे अने फरी कर्म बंध थाय ज नहीं अने मारामां तप द्वारा अनासकत भाव केळवी वैराग्य प्रगटे एवी कृपा वरसावजो.

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol.: 14, Issue: 05, Date:10.10.2019, Postal Registration No. MNE/171/2018-20.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
License to post without prepayment, WPP license No. MR/Tech/WPP-273/NE/2018.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

જન્મોત્સવ બની જતો હોય છે માનવતા મહોત્સવ

લુક એન લર્ન મિશનના પ્રેરણાદાતા રાષ્ટ્રસંત પરમ પૂજ્ય ગુરુદેવ શ્રી નમ્રમુનિ મહારાજ સાહેબના ૪૯માં જન્મોત્સવ અવસરે... પારસધામ સેન્ટરે પણ ઉજવ્યો માનવતા મહોત્સવ.

જીવદયાધામ માં બાળકો અને દીદીઓએ શ્રી નમસ્કાર મંત્ર અને ઉવસગ્ગહરં સ્તોત્ર સંભળાવી અનેક ગાયોને લાડવા અને લાપસી ખવડાવ્યાં. લુક એન લર્ન ના બાળકોને સમજાવવામાં આવ્યું કે જો આ ભવમાં મળેલી પરિપૂર્ણ ઇન્દ્રિયો નો સદુપયોગ નહી કરીએ અને ઇગો, ઇર્ષ્યા વગેરે કરીશું તો આપણે પણ આવા ભવ માં જઈ શકીએ છીએ. ગાયો ને ખવડાવતાં બાળકોને ખૂબ જ ખુશી થઈ અને પરોપકાર અને માનવતાના સંસ્કાર દૃઢ થયા.

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth